Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री कान्यकुब्ज बंशावतन्स पं० मन्नीलाल मिश्रात्मज कानपुर चौक,
निवासि पं० महेशनारायण कृता ।

अथ पार्वण श्राद्धपद्धतिः

भाषा टीका

देवर्षि पितृ तर्पण सहिता ।

प्रकाशकः—श्रीकृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर–१

बम्बई छापाखाना

२०००]
कानपुर–१
[सन् १९७५ ई० । [मू० २) ६०

सर्वाधिकार हमेशा के लिये प्रकाशक के आधीन है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री कान्यकुब्ज वंशावतन्स पं० मन्नीलाल मिश्रात्मज कानपुर चौक,
निवासि पं० महेशनारायण कृता ।

अथ पार्वणश्राद्धपद्धतिः

भाषा टीका

देवर्षि पितृ तर्पण सहिता ।

प्रकाशकः—श्रीकृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर—१

बम्बई छापाखाना

२०००] कानपुर—१ [सन् १९६५ ई० । [मू० २) रु०

सर्वाधिकार हमेशा के लिये प्रकाशक के आधीन है।

दै ८६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

श्राद्ध का निर्णय

भाद्र पूणिमामारभ्य, चाश्विनस्याऽसितेदले । कन्यार्कयुक्तपक्षेतुश्राद्धं कार्यं दिनेदिने।। १

या तिथिर्यस्य मासस्य मृताहेतुःप्रवर्तते । सा तिथिः पितृपक्षेतु पूजनीयाप्रयत्नतः ।।२

श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने अविज्ञाते मृतेऽहनि । एकादश्याममायांचकर्तव्यंपितृपूजनम् ।।३

नतत्रवीराजायन्ते नारोगांनशतायुषः । नचश्रेयोधिगच्छन्तियत्रश्राद्धं विवर्जितं ।।४

पार्वण-श्राद्ध-सामग्री

कुश	पुष्प	यज्ञोपवीत १४	कपड़ा
गङ्गाजल	माला	तुलसीदल	पत्तल
रेणुका	विल्पत्र	सुपारी	दोनैया १०१
गोदुग्ध	चन्दन सफेद	धूप बत्ती	खीर या जव का चूर्ण अथवा खोया
तिल	ढाक के पत्तो	दीप	दक्षिणा श्रद्धायुक्त
चावल	मधु	कर्पूर	पूर्णपात्र के लिये ताम्रपात्र
जव	शर्करा	सामयिक फल	आसन २
पान २४	घृत	सूत कच्चा	पूजन के अन्य पार्षद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ श्री ॥

श्री मन्निलालस्य कवेः सुतेन महेशनारायण नामकेन
आरम्यकर्णाख्यपुर थितेन कृता शुभा पार्वणश्राद्ध टीका

अथ

पार्वण श्राद्ध पद्धति

भाषा टीका

आदौ कर्ता स्नात्वा शुक्ल वाससी परिधाय श्राद्ध भूमिमागत्य दक्षिणाभिमुख उपविश्य अपवित्रः इत्यनेनमंत्रेणसव्येनाचमेत् ॥१॥ ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थागतोऽपिवा । यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्ष सबाह्याभ्यन्तरःशुचिः ॥ २ ॥ पवित्रा धारणम् । संकल्पं कुर्य्यात् ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रथम श्राद्ध करने वाला स्नान करे शुद्ध धोती पहन अंगौछा ले श्राद्ध भूमि में आकर दक्षिण मुख बैठकर अपवित्रः इस मंत्र से सव्य हो ३ बेर आचमन करे ।। १ ।। ॐ अपवित्रः यह आचमन का मन्त्र है ।। २ ।। फिर दो कुश की पैंती (पवित्री) दाहिने हाथ की अनामिका में और तीन कुश की पैंती बायें हाथ की अनामिका (छिगुनी के पहले जो अंगुली है) में पहन दाहिने हाथ में जल, चावल, पान, सुपारी, दक्षिणा लेकर संकल्प करै ।। ३ ।।

तत्र संकल्पः-ॐ तत्सदद्यैतस्यब्रम्हणोन्यि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेत वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे वर्तमान नाम सम्वत् श्री सूर्य्य अमुकायने अमुकतौ क अमुक मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे श्रुति स्मृति पुराणोक्त शुभ पुण्य प्राप्तिकामः पित्रादित्रय मातामहादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनां पुरूरवार्द्रव सनाम्यां विश्वेषान्देवानां ततोऽपसव्यं अमुक गोत्राणां अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुकामुकाशर्म्मणा वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह बृद्धप्रमातामहानां अमुकामुकामुक शर्म्मणां अग्नि वरुण प्रजापतिस्वरूपाणां सपत्नीकानां, सव्यं, अमुकगोत्रो-ऽमुकशर्मा पितृ तृप्तिकामोहं विश्वेदेवापूर्वकं पार्वण श्रद्धं करिष्ये ।। ४ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यवाक्षतान् गृहीत्वा विश्वेदेवान् आवाहयेत । अस्मत् पित्रादित्रय मातामहा- दित्रय श्राद्ध समन्धितां पुरूरवार्द्रव सनाम्नां विश्वान्देवान् आवाहयिष्ये। आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवामहाबलाः येयत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ॥ ५ ॥

ॐ तत्सदद्यैतस्य यह सब संकल्प हैं, इसमें जहाँ सव्य लिखा है वहां सव्य होकर और जहाँ अपसव्य लिखा है वहाँ अपसव्य हो जाय, जहाँ अमुक गोत्राणां अस्मत् पितृ पितामह लिखा है वहां गोत्र वर्ण सहित अपने बाप, दादा, परदादा, माता, दादी, परदादी का नाम लेवे, जहाँ अमुक गोत्रणां अस्मन्मातामह प्रमातामह लिखा है वहां गोत्र सहित नाना, नानी, परनाना, परनानी बृद्ध परनाना बृद्ध परनानी का नाम लेवे। दूसरे को श्राद्ध करावे तो अस्मत्पितृपितामह की जगह युष्मत पितृपितामह कहे। अस्मन्माता की जगह युष्मत् मातामह कहे सब जगह ॥ ४ ॥ फिर दो दो कुश के बने हुए दो पत्तों पर पूर्व मुख विश्वेदेवा रख के हाथ में जव चावल ले विश्वेदेवा का आवाहन करे, अस्मत्पित्रादित्रय पढ़ के ॥ ५ ॥

तुलसी पूगीफल कुश गन्ध पुष्प यवाक्षतान् गृहीत्वा विश्वेदेवान्निमंत्रयेत् अस्मत्पित्रादित्रय मातामहादित्रायश्राद्ध सम्बन्धिनां पुरूरवार्द्रव सनाम्नां विश्वे- षान्देवानां स्थाने अद्य कर्तव्ये श्राद्धे भवन्तोमया निमन्त्रिताः आमंत्रितास्मः ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक दोनैया में फूल, तुलसीदल, चन्दन, पान, सुपारी, जव चावल ले 'अस्मत् पित्रादित्रय मातामहादित्रय' पढ़ विश्वेदेवा का निमंत्रण करे अर्थात् दोनैया की सब चीजें चढ़ा दे ।। ६ ।।

पा० एवं द्वितोयमपि ।। ७ ।।

श्रा० ऐसे ही दूसरे विश्वेदेवा का निमंत्रण करे ।

ततोहस्तद्वयं संपुटी करणम् । अक्रोधनैः शोचपरैः सततंब्रम्हचारिभिः ।। भवितव्यंभवद्भिश्च मया च श्राद्धकर्मणि । सर्वायास विनिर्मुक्तैः कामक्रोधविवर्जितैः भवितव्यं भवद्भिश्चमया च श्राद्ध कर्मणि ।। ८ ।।

"अक्रोधनैः" पढ़कर विश्वेदेवा के हाथ जोड़े ।। ८ ।।

ततोऽपसव्यम्तिलाक्षतान्गृहीत्वापितृ ब्राम्हणान् आवाहयेत् अमुकगोत्रान्-अस्मत्पितृ पितामहप्रपितामहान् अमुकामुकामुक शर्मणोवसुरुद्रादित्यस्वरूपान्सपत्नीकान् आवाहयिष्ये ! उशन्तस्त्वानिधीमह्युशंतःसमिधीमहि । उशन्नुशतआवहपितृन् हविषेअत्तवे । मा० दी०

अपसव्य हो तीन २ कुश के बने हुए पितृब्राह्मण मातामह ब्राह्मण दो पत्तों पर उत्तर मुख करके तिल चावल हाथ में ले 'अस्मत् पितृपितामह' पढ़ता हुआ गोत्र सहित पिता माता बाबा आजी परदादा परदादी का नाम ले 'उशन्तस्त्वा' पढ़ आवाहन करे ।। ९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमुक गोत्रान् अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमाता महान् अमुकामुकामुक शर्मणोऽग्नि वरुणप्रजापति स्वरूपान् सपत्नीकान् आवाहयिष्ये ।। १० ।।

तिल चावल ले 'अमुक गोत्रान् अस्मन्मातामह' पढ़ता हुआ नाना नानी, परनाना परनानी वृद्ध परनाना वृद्ध परनानी का गोत्र समेत नाम उच्चारण कर आवाहन करे अर्थात् तिल चावल मातामह ब्राह्मण पर छोड़ दे ।। १० ।।

पितृब्राम्हणान्निमंत्रयेत्तिलाक्षत् पूगफलं तुलसीपुष्पगंधकुलतांबूलानिगृहात्वा आयान्तुनः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्तः पथिभिर्देवयानैः अस्मिन् यज्ञेस्वधयामदन्तोधि ब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान् । अमुकगोत्रीणांअस्मत् पितृपितामहपपितामहानाममुकामुका–मुकशर्मणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणांसपत्नीकानां अद्यकर्त्तव्ये श्राद्ध भवन्तोमया निमन्त्रिता आमन्त्रितास्मः ।। ११ ।।

फिर दोनैया में तिल, चावल, चन्दन, फूल, तुलसी, पान, सुपारी, कुश लेकर 'आयान्तुनः पितरः' तथा अमुक गोत्राणां' पढ़ता हुआ गोत्र समेत बाप, परदादा, माता, दादी परदादी का नाम उच्चारण करके पितृब्राह्मणों का निमंत्रण करे अर्थात् दोनैया की सब चीजें उन पर छोड़ दे ।। ११ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथ हस्तद्वयं संपुटी करणम्

पा० **अक्रोधनैरिति पठेत् ।। १२ ।।**

आ० अक्रोधनैः पढ़के हाथ जोड़े ।। १२ ।।

७ **एवम् मातामहब्राम्हणान्निमंत्रयेत् । अमुक गोत्राणांअस्मन्मातामहप्रमातामह वृद्धप्रमाता महानां अमुकामुकामुकशर्मणांअग्निवरुण प्रजापति स्वरूपाणां सपत्नीं कानां अद्य कर्तव्ये श्राद्धे भवन्तोमयानिमंत्रिताः आमन्त्रितास्मा ।। १३ ।।**

पहले जैसे पितृब्राह्मणों का निमन्त्रण किया है वैसे ही दोनैयां में तिल चावल चन्दन फूल तुलसी पान सुपारी कुश लेकर अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह उच्चारण करता हुआ गोत्र सहित नाना नानी परनाना परनानी वृद्ध परनाना वृद्ध परनानी का नाम लेकर मातामह ब्राह्मणों का निमंत्रण करै, अक्रोधनः पढ़के हाथ जोड़े ।। १३ ।।

सव्यम्–विश्वेदेवाब्राम्हणाआगताःवै,सुस्यागतम्पादप्रक्षालनम् । नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्र पादाक्षिशिरोरुवाहवे । सहस्रनाम्नेपुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटी युग धारिणेनमः । नमः कमल नाभाय नमस्तेजलशायिने । नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते ।। १४ ।। मा० टी० ७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सव्य हो दो दोनैया में कुश जल डाल 'आगतंवः' नमोस्वत्वनंताय' नमः कमलनामाय' पढ़के दोनों विश्वे देवा का पाद प्रक्षालन करें अर्थात् एक २ दोनैया के जल से एक २ विश्वेदेवा के पैर पखारें ॥ १४ ॥

अथार्घपर्णपूज्यसाक्षतगंधपुष्पकुशयवजलार्घ्यपात्रमादाय । सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षःसहस्रपात् सभूमिग्वंसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठदृशांगुलम् । अस्मत् पित्रादित्रयमाता-मह्रादित्रय श्राद्धसंबंधिनो विश्वेदेवा एषपादार्घ्यः प्रीयन्ताम् वो नमः ॥ १५ ॥

एक दोनैया में जल चावल चन्दन फूल तुलसीदल कुश जव लेकर सहस्र शीर्षा अस्मत्पित्रा-दित्रय पढ़के दोनों विश्वेदेवा पर चढ़ा देवे ॥ १५ ॥

ततोऽपसव्यम्–आगतंवःसुस्वागतम् पितृब्राम्हणानां पादप्रलक्षालनम् । यत्फलं कपिलादानेकार्तिक्यांज्येष्ठपुष्करे । तत्फलंपाण्डवश्रेष्ठविप्राणांपादशौचने ॥ विप्र पादोदक्लिकन्नायावत्तिष्ठतिमेमिनी । तावतपुष्करपात्रेषुपिबन्ति पितरोजलम् ॥१६॥

अपसव्य हो दोनैया में कुश का टुकड़ा और जल डाल 'आगतंवः' और "यत्फलं कपिला दाने" पढ़ता हुआ पितृ ब्राह्मणों के पैर पखारे ॥ १६ ॥

एवम् मातामह ब्राम्हणानां पादप्रक्षालनम् ॥ १७ ॥

ऐसे ही जल कुश से मातामह ब्राह्मणों का पादप्रक्षालन करे ॥ १७ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुनः अर्घ्यपूर्ण पूजयेत्। तिलाक्षत गन्ध पुष्प कुश जलार्घपात्रमादाय अमुक गोत्राः अस्मत्पितृपितामह प्रपितामहाः अमुकामुकामुकशर्माणो वसरुद्रादित्यस्वरूपा सपत्नीकाः एषपादार्घ त्रेधाविभज्ययुष्मभ्यं स्वधा ॥ १८ ॥

दोनैया में तिल, चावल, कुश, चन्दन, फूल, जल डाल 'अमुक गोत्रः अस्मत् पितृपितामहः प्रपितामहाः पढ़ कर पितृ ब्राह्मणों पर चढ़ा दे ॥ १८ ॥

अमुक गोत्राः, अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः, असुकामुकामुकशर्माणा अग्निवरुणप्रजापतिस्वरूपाः सपत्नीकाः एषपादर्घस्त्रेधाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधा ॥१९॥

जैसे पितृ ब्राह्मणों को अर्घ दिया है वैसे हो तिल, जल, कुश, चंदन, फूल, चावल अमुक गोत्र गोत्रः अत्मन्मातामह पढ़के अर्घ देवे (सब चीज दोनैया की चढ़ा दे) ॥ १९ ॥

सव्यं आचमनम् ॥ २० ॥

सव्य होकर आचमन करे ॥ २० ॥

विश्वेदेवा इदमासनमास्यताम् आस्ये ॥ २१ ॥

कुश का आसन दे विश्वेदेवा को [दोनों विश्वादेवा के पत्तों पर एक एक कुश का टुकड़ा रख दे] ॥ २१ ॥

अपसव्यम् पितृ ब्राम्हणाः इदमासनमास्यताम् आस्ये ॥ २२ ॥

फिर अपसव्य हो पितृ ब्राह्मण के पत्ते पर एक कुश धर दे ॥ २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मातामह ब्राम्हणाः इदमासनमास्यताम् आस्ये ।। २३ ।।

मातामह ब्राह्मणों के पत्ते पर एक कुशा धरदे (यही आसन है) ।। २३ ।।

सव्यं आचमनम् ।। २४ ।।

सव्य होकर आचमन करे ।। २४ ।।

गृहदीप प्रज्वालनम् ।। २५ ।।

धर का दीप जलावे ।। २५ ।।

कुशेन आत्मासनम् ।। २६ ।।

एक कुशा अपने पैर के नीचे रखले ।। २६ ।।

कर्मपात्रस्य आसनं स्वधामे कर्मपात्रस्थापनम् ।। २७ ।।

कर्मपात्र [लोटा या तांबे का कोपरा] अपने बांये धरे उसके तले कुश धर दे ।। २७ ।।

पात्रे पवित्र करणम्-पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुवः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण मा०
पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिःतस्यते पवित्रापतेपवित्रापूतस्ययत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।।२८।। ठी०

पवित्रेस्थो पढ़ कर्मपात्र करे ।। २८ ।। १०

जल प्रक्षेपः, शन्नौदेवी रभिष्टय आपोभवन्तुपीतये शंय्योरभिस्रवन्तुनः ।। २९।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शन्नोदेवी पढ़ कर जल छोड़ दे ।। २९ ।।

यव प्रक्षेपः-यवोसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातोदिवेत्वा अन्तरिक्षयत्वा

मा० पृथिव्यैत्वाशुन्धतां लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि ।। ३० ।।

मा० यवोसि मंत्र पढ़के जल छोड़ै ।। ३० ।।

११ तिल प्रक्षेपः–तिलोसिसोमदेवत्यो गासवोदेवनिमितः । प्रयत्नमद्भिः प्रकृता-

स्वधया पितृंल्लोकान् प्रीणोहि न स्वाहा ।। ३१ ।।

कर्म पात्र के नीचे तिल डाले ।। ३१ ।।

तुलसी चन्दनाक्षत पुष्पच कर्मपात्रे प्रक्षेपः ।। ३२ ।।

तुलसी चंदन चावल फूल कर्म पात्र में डाले ।। ३२ ।।

कर्मपात्र जलेन कुशः सर्वत्रसेचनम् ॐ अपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थांगतोऽपिवा । मा०

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तराः शुचिः ।। ३३ ।। सो

'अपवित्रः' पढ़े कुश कर्मपात्र का जल श्राद्ध भूमि पर छिड़के ।। ३३ ।। ११

हस्तौसंयोज्यपठेत् । सप्तव्याधादशार्णेषु मृगः कालंजरेगिरौ । चक्रवाका सर-

द्वीपे हंसा सरसिभानसे । देपिजाता कुरुक्षेत्रे ब्राम्हणाः वेंदपारगाः । प्रस्थितादीर्घम-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ध्यानं यूयं किमवसीदथ । पंचक्रोशं गयाक्षेत्रां क्रोशमेकंगयाशिरः । यत्रायत्रास्मरिष्यामिपितृणांदत्तामक्षयम् । श्राद्धारंमेगयांध्यात्वा ध्यात्वादेवंगदाधरम् । स्वान पितृन्मनसाध्यात्वा ततः श्राद्धं समारभेत् ॥ ३४ ॥

सप्तव्याधा दशार्णेषु से लेकर ततः श्राद्धं सभारभेत् तक पढ़ के हाथ जोड़े ॥ ३४ ॥

अपसव्यं, दिग्बंधनम् । तिलाक्षतद्विगुण कुशैश्च कुर्य्यात् ॥ ३५ ॥

अपसव्य हो एक पत्ते में कुश के टुकड़े और तिल चावल धरके दिग्बन्धन कर ॥ ३५ ॥

अग्निष्वात्ताः पितृगणः प्राचीरक्षन्तुमे दिशम् । इतिप्राच्याम् ॥ ३६ ॥

अग्निष्वात्ताः पढ़ के एक कुश का टुकड़ा एक तिल एक चावल पूर्व की ओर फेंके ॥३६ ॥

तथाबर्हिषदः पान्तु याम्यांये पितरः स्थितः इतियाम्याम् ॥ ३७ ॥

एक कुश का टुकड़ा एक तिल एक चावल दक्षिण की ओर फेंके ॥ ३७ ॥

प्रतीचीमाज्यपास्तद्वत् इत्यनेन प्रतीच्याम् ॥ ३८ ॥

पश्चिम की ओर फेंके ॥ ३८ ॥

उदीचीमपि सोमपाः । इत्यनेनोदीच्याम् ॥ ३९ ॥

उत्तर की ओर तिलाक्षत फेंके ॥ ३९ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अधोर्ध्वमपि कोणेषु हविष्मन्तश्च सर्वतः ॥ ४० ॥

नीचे ऊपर चारो कोनों में एक एक कुश तिल चावल फेंकै ॥ ४० ॥

रक्षो भूतपिशाचेभ्यस्तथैवासुरदोषतः । सर्वतश्चाधिपस्तेषांयमोरक्षांकरोतुमे ॥ तिलारक्षन्तु ह्यसुरान् दर्भारक्षन्तुराक्षान् । पक्तिर्वैश्रोत्रियोरक्षेदतिथिः सर्वरक्षकः।। नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेशरक्षतां सर्वतोदिशम् ।।४१।।

पितृ ब्राम्हण मातृ ब्राह्मण की पंक्ति में एक एक कुश एक तिल, चावल फेकै ।। ४१ ।।

सव्यम् । नीबी बंधनम् दक्षिण कटौ त्रिभिः कुशतिलैश्च कुर्य्यात् । त्वंवनेभ्य-स्त्वामोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायते शुचिः ।। ४२ ।।

फिर इसी कुश तिल चावल वाले पत्ते को चौपरताय सव्य हो दाहिनी ओर कमर में खोंस ले, 'त्वंवनेभ्य' पढ़ के । (क्षत्रिय वैश्य शूद्र को अपसव्य हो नीवी बन्धन करना चाहिए) ।।४२।।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगीभ्य एवच । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः इति त्रिर्जपेत् ।। ४३ ।।

देवताभ्यः मन्त्र तीन बेर जप करे ।। ४३ ।।

अपसव्यम्, संकल्पं कुर्यात् । ॐ तत्सदद्येहेत्यादि अमुक गोत्राणां अस्पस्पितृ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पितामहप्रपितामहानाममुकामुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणांसपत्नीकानां अमुकगोत्राणां अस्मन्मातामहप्रमातामह बृद्ध प्रमातामहानां अमुकाम् कामुकशर्मणां
पा० सपत्नीकानांपुरूरवार्द्रवपूर्वक अमु कतिथि विहितपार्वण श्राद्ध महं करिष्येकुरुष्व।।४४।।
श्रा० सब्य हो पान सुपारी जल दक्षिणा ले संकल्प करें ।। ४४ ।।
१४ सव्यं, दृष्टिनिपातादेर्दोषात्पादकादीनाँपवित्रातास्तुकशोदकेन अभ्युक्ष्यपाकंप्रोक्ष्य।।४५।।

सब्य होकर पिंडों के लिये खोवा या खीर अथवा जो चीज हो उसमें कर्मपात्र का जल कुश से छिड़क दे ।। ४५ ।।

पुनः हस्तार्घदानम् । तिस्रो द्रोणिकाः स्थापयित्वा । कुश यव जल तुलसी प्रक्षेपः एकस्यां । द्वयोस्तिल जल कुश प्रक्षेपः ।। ४६ ।।

हस्तार्घ दान के लिए तीन दोनैयां धर एक में कुश जव तुलसी डाले दो में तिल जल कुश डाले ।। ४६ ।।

देवपात्रं वाम करे गृहीत्वादक्षिणेन करेण मुद्रयित्वा देवपात्रं सुसम्पन्नं २ एववदेत् । मा०
सहस्र शीर्षेतिपूजनम् नमोनारायणाययादिव्याआपः पयसासबभूवुर्याअंतरिक्षउत्पार्थि दो०
वीया हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तानआपः शिवः सग्वंस्योना सुहवाभवन्तु पित्रादित्रय १४

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माता महादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिना विश्वेदेवा एषहस्तार्घः प्रोयन्ताम्वा नमः अर्घेपुः नमत्यर्घमस्तु किंचिज्जलंदद्यात् ।। ४७ ।।

तुलसी जव बाली दोनैया बायें हाथ में धर दहिने हाथ से ढक (मूंद) ले और देवपात्र सुसम्पन्नं सुसम्पन्नं ऐसा कह, सहस्रशीर्षा नमोनारायणाय पित्रादित्रय से प्रीयंतांवोनमः तक पढ़कर दोनों विश्वेदेवा पर जल जव तुलसी चढ़ा दें इसी दोनैया में थोड़ा जल और छोड़ दे ।। ४७ ।।

अपसव्यम् पितृपात्रार्घं सुसम्पन्नं सुसम्पन्नं वदेत् । ॐ नमोनारायणेति पठित्वा-सहस्र शीर्षेतिसम्पूज्य, अमुकगोत्राः अस्मत्पितृपितामहाप्रपितामहाः अमुकामुका-मुकशर्मणः एषहस्तार्घस्त्रो धाविभज्ययुष्मभ्यं स्वधानमः अर्घेपुनः प्रत्यर्घमस्तु किंचिज्जलदद्यात् ।। ४८ ।।

अपसब्य हो दूसरी दोनैया बायें हाथ में ले दाहिने हाथ से मूंद कर पितृ पात्रार्घ सुसम्पन्नं सुसम्पन्नं कह नमोनारायणाय सहस्रशीर्षा अस्मत् पित्रादित्रय, युष्मभ्यंस्वधानमः तक पढ़ कर पितृ ब्राह्मणों पर चढ़ा दे और उसी दोनैया में थोड़ा जल और डाल दे ।। ४८ ।।

एवम् मातामहपात्रं सुसम्पन्नं सुसम्पन्नं वदेत्यादिव्या आपःपयसा सम्बभूवुर्या अन्तरिक्षाउत्पाथिवीर्याः हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाःसर्ग्वंस्योनः सुहवा भवंतु । सहस्रशीर्षेतिसंपूज्यअस्मन्मातामह प्रमातामह, वृद्धप्रमातामहा अमुकामुका-मुकशर्मणः एषहस्ताघ स्त्रोधाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधानमः अर्घपुनः प्रत्यर्घमस्तु--किचिज्जलंदद्यात् ।। ४९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे ही तिल कुश वाली दूसरी दोनैया बायें हाथ में लेकर दाहिने से बन्द कर सुसम्पन्नं २ कहे, या दिव्य आपः सहस्रशीर्षा, अस्मन्मातामह पढ़कर गोत्र समेत नाना नानी परनाना परनानी
 वृद्ध परनाना वृद्ध परनानी का नाम ले मातृ ब्राह्मणों में चढ़ा दे उसी में थोड़ा पानी और
 छोड़ दे ॥ ४९ ॥

 प्रथममे पात्रे सग्वं श्रवानसमवनीय शुन्धतां लोकः पित्रषदनाः पित्रवदनमसि पितृभ्यः स्थानमसि इति मन्त्रेण पात्रांन्युब्जा कृत्वा तदुपरिकुशत्रयनिधानम् ॥५०॥

जौ चावल वाली दोनैया का जल पितृ ब्राह्मणों की दोनैया में छोड़ दे पितृ ब्राह्मणों की तिल कुश वाली दोनैया का जल मातृ ब्राह्मणों की तिलकुश वाली दोनैया में छोड़ दे फिर इसी दोनैया का जल पहली दोनैया जव अक्षत वाली जो विश्वेदेवा की है उसमें छोड़ दे फिर यही जल एक दोनैया में छोड़ के अलग रख दे फिर प्रथमे पात्रे पढ़के तीनों दोनैया उल्टी करके रखदे और उनके ऊपर तीन कुश रख दे ॥ ५० ॥

सव्यम् । पूजनं कुर्य्यात् गंधादिदानं तुलसी चन्दनाक्षत तांबूल पूंगीफल धूप द्वीप नैवेद्य वस्त्र यज्ञोपवीत दक्षिणां दद्यात् । संकल्पः अस्मत्पित्रादित्राय माता महा-
दित्रायश्राद्धसंबंधिनोविश्वेदेवाःइदमथाकृतमर्चनंविश्वेदेवाः प्रीयन्तांवोनमः ॥५१॥

सव्य हो विश्वेदेवा की पूजा करे चन्दन चावल फूल फल धूप दीप नैवेद्य पान सुपारी वस्त्र जनेऊ दक्षिणा सङ्कल्प पढ़के चढ़ावे ॥ ५१ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपसव्यम् । पूजनं कुर्य्यात् गंधादिदानं अमुकगोत्रा अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहा अमुकामुकामुकशर्माणो वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः अमुकगोत्रा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा अमुकामुकामुकशर्माणः अग्नि, वरुण प्रजापति स्वरूपाःसपत्नीकाः यथाकृतमर्चनषोढा विभज्ययुष्मभ्यं स्वधानमः ॥५२॥

भा० भा० १७

सव्य हो अस्मत्पितृपितामह, अस्मन्मातामह पढ़ गोत्र समेत पिता माता दादा दादी परदादा परदादी नाना नानी परनाना परनानी बृद्ध परनाना वृद्धपरनानी का नाम ले पितृ ब्राह्मण और मातृ ब्राह्मणों की पूजा करै अर्थात् चन्दनाक्षत पुष्पफल धूप दीप नैवेद्य पान सुपारी जनेऊ वस्त्र दक्षिणा चढ़ाव ॥ ५२ ॥

सव्यं आचमनं, अग्नौकरणं यथचक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति एवं । मंडल भस्मैतत् सर्वभूतानिरक्षतु एवं भस्मनामण्डलंकृत्वाएकं पात्रं स्थापयेत् ॥५३॥

सव्य हो आचमन कर चिमटे से एक चिनगारी आगी की पकड़ बिश्वेदेवा के आगे गोलाकार यथा चक्रासुधोविष्णुः पढ़के घुमा देवे यही भस्म मण्डल है इसी गोल मंडल में पत्ता रक्खे॥५३॥

भा० टी० १७

अपसव्यम् । भस्मना मण्डलद्वयं कृत्वा पात्रद्वयं स्थापयेत् । तिस्रोद्रोणिकाः सजलाः पात्राग्रेस्थापनीवा एकां द्रोणिकां सजलां समुद्धृत्य ॥ ५४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपसव्य हो दो भस्म मण्डल पितृ ब्राह्मणों के बीच में बनाय कर दो पत्ते दोनों भस्म मंडल में धरै तीन दोनैया जल से भरके धरै एक विश्वेदेवा के भस्म मण्डल के आगे सव्य हो और दो पितृ ब्राह्मणों और मातृ ब्राह्मण के मण्डल के आगे अपसव्य हो धरै ॥ ५४ ॥

सव्यम् । घृताक्तमन्नमुद्धृत्यशर्कराघृतंप्रक्षिप्यविष्णवेनैवेद्यंदद्यात् । नाभ्याआसीदतं रिक्षग्वंशीष्णोद्यौःसमवर्तत पद्भ्यांभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकान्अकल्पयन् ॥५५॥

पिण्डों के लिये जो खीर बनाई है उसमें घी शक्कर मिलाय सव्य हो विष्णु के लिये नैवेद्य एक पत्ते में नाभ्याआसीदन्तरिक्षं पढ़के रख दे ॥ ५५ ॥

विश्वेदेवा ब्राम्हणाः अग्नौकरणं करिष्ये ॐ कुरुष्व ॥ ५६ ॥

पुनः एक पत्ते में खीर रखके विश्वेदेवा ब्राह्मणाः अग्नौकरणं करिष्ये कहे ॥ ५६ ॥

अपसव्यम् पितृब्राम्हणा अग्नौकरणं करिष्ये । ॐ कुरुष्व । मातामहब्राम्हणा अग्नौकरणं करिष्ये ॐ कुरुष्व ॥ ५७ ॥

अपसव्य हो दो पत्तों में अलग-अलग थोड़ी खीर धरके पितृ ब्राह्मणा अग्नौकरणं करिष्ये और मातामह ब्राह्मणा अग्नौकरणं करिष्ये कहै ॥ ५७ ॥

ॐ अग्नये कव्य वाहनाय स्वाहा इदमग्नये कव्य वाहनाय ॥ ५८ ॥

सोमाय पितृमते स्वाहा इदं सोमाय पितृमते ॥ ५९ ॥

विश्वेदेवा के भस्म मण्डल में जो पत्ता रक्खा है उसमें सव्य हो तीन बेर खीर [जाउर] तोड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

दे [छोड़ दे] और उसी पत्ते में थोड़ा घी और शहद लगाले। एक दौनैया जल से भर कर आहुति देने के लिये रख ले ॥ ५८॥ पितृ ब्राह्मण और मातामह ब्राह्मणों के भस्म मण्डल में जो पत्ते धरे हैं अपसव्य हो दोनों में तीन बेर खीर [छोड़ दे] इन्हीं पत्तों में थोड़ा घी और शहद लगाले ॥ ५६ ॥

तृतीये तूष्णीं शेषं पितृ मातामह पात्रो प्रक्षिपेत् ॥ ६० ॥

चौथी दोनैया जो आहुति देने के वास्ते धरी है। उसी पानी में अग्नये कव्यवाहनाय पढ़के अग्नौकरण की खीर जो पत्ते में है उससे दो आहुति दे आहुति से जो खीर बचे वह मौन हो पितृ ब्राह्मणों के पात्र (पत्ते) में धर दे ॥ ६० ॥

सव्यम्, पात्रालंभनम् ॐपृथिवीते पात्रंद्यौरपिधनंब्राम्हणस्य मुखे अमृतेअमृतंजुहोमि स्वाहा इदम्विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्। समूढ़ मस्यपांसुरे,स्वाहाहव्यग्वंरक्षइद मन्नम् इदमापः इदमाज्यम् इदमैक्षवं इदमुपकरणम् एतत्सर्वअंगुष्ठंयवान् विकीर्य॥६१॥

सव्य हो पृथिवी से पात्रं पढ़ता हुआ विश्वेदेवा के भस्म मण्डल में जो खीर का पत्ता है उसे छूवै इदं विष्णुः पढ़के इदमापः इदमाज्यम् इदमैक्षवं एक एक चीज का उच्चारण करते हुये खीर घी शहद जल सब चीजें छू कर विश्वेदेवा के अंगूठा छुवावे और थोड़े जव छोड़ दे ॥ ६१ ॥

संकल्पः अस्मत् पित्रादित्रय मातामहादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिनः पुरूरवनाम्नो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विश्वेदेवा इदमन्नं घृताद्युपस्कर सहित मुपनीत मुपनेष्यमानं कुशवट ब्राम्हण भोजन तृप्ति पर्य्यन्त विश्वेदेवाः प्रीयन्तां वो नमः ॥ ६२ ॥

अस्मत् पित्रादित्रय पढ़के संकल्प करै ॥ ६२ ॥

अपसव्यम् पितृपंक्तौ । पृथिवी ते पात्रं द्यौर पिधानं ब्राम्हणस्य मुखे अमृते अमृतं-जुहामि स्वाहा । इदं विष्णुविचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् समूढ़मस्यापग्वंसुरेस्वाहाविष्णोः कव्यग्वं रक्ष इदमन्नम् इदमापः इदमाज्यन् इदमैक्षवं इदमुपकरणम् एतत्सर्वं कव्यं अंगुष्ठावगाहनं तिलान् विकीर्य ॥ ६३ ॥

अपसव्य हो पृथ्वी ते पात्रं पढ़ पितृ ब्राह्मणों का जाउर (खीर) वाला पत्ता छुवै इदम्विष्णुः इदमन्नं इदमापः इदमाज्यं इदमैक्षवं पढ़के एक एक चीज का नाम लेकर हाथ के इशारे से दिखाता हुआ खीर जल घी शहद सब चीजें छूकर पितृ ब्राह्मणों के अँगूठा छुवाय के थोड़े तिल छोड़दे॥६३॥

एवम् मातामह पंक्तौ कुर्यात् ॥ ६४ ॥

ऐसे ही मातामह का पत्ता छूकर जो क्रिया पितृ ब्राम्हणों का पत्ता छूकर की है वही क्रिया करें ॥ ६४ ॥

अथ संकल्पः अमुकगोत्रा अस्मत् पितृ पितामह प्रपितामहा अमुकामुकामुक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शर्माणो वसुरुद्रादित्य स्वरूपाः सपत्नीकाः अस्मन्मातामह प्रमातामहवृद्धप्रमातामहा अमुकामुकामुकशर्माणः अग्निवरुणप्रजापतिस्वरूपाः सपत्नीकाः इदमन्नंयथोपस्कर
पा० सहितंषोढा विभज्य युष्मभ्यं स्वधानमः ।। ६५ ।।

श्रा० जल चावल दक्षिणा हाथ में धर गोत्र समेत पिता माता दादा दादी परदादा परदादी नाना
२१ नानी परनाना परनानी का वृद्ध परनाना वृद्ध परनानी का नाम ले संकल्प छोड़ दे ।। ६५ ।।

सव्यम् । आपोशानदानम् विश्वेदेवा ब्राम्हणा अमृतंजुषध्वम् । जुषामः ।।६६।।

सव्य हो दोनैया में जल भर विश्वेदेवा ब्राह्मणाः कहके विश्वेदेवा पर चढ़ा दे ।। ६६ ।।

अपसव्यम् पितृब्राम्हणा अमृतं जुषध्वम् जुषामः मातामह ब्राम्हणाअमृतं-जुषध्वम् जुषामः ।। ६७ ।।

अपसव्य हो दोनैया में जल भर पितृ ब्राम्हणा कहके चढ़ा दे इसी प्रकार मातामह ब्राम्हणों पर मातामह ब्राम्हणा पढ़कर जल चढ़ा दे ।। ६७ ।। मा०

सव्यम् । गायत्री स्मरणम् ।। ६८ ।। दौ०

सव्य हो तीन बेर गायत्री जप करैं ।। ६८ ।। ११

अपसव्यम् विकरासनम् नैऋत्यकोणे दद्यात् ।। ६९ ।।

अपसव्य हो नैऋत्य कोने में १ कुश धरे यही बिकरासन है ।। ६९ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

असंस्कृतप्रप्रणीतानां त्यागीनां कुलयोषिताम् । उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषुविकरासनम् । अग्निदग्धाश्चयेजीवाः येप्यदग्धाकुलेमम । भूमौदत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परांगतिम् । कुशांस्त्यक्त्वा हस्तौचरणौ प्रक्षालयेत् ॥ ७० ॥

असंस्कृत प्रणीतानां उच्चारण कर विकरासन पर जल छोड़ै, कुशा धरै पुनः तिल घी शहद मिलाय एक पिंड बनाय दोनैया में जल भर अग्निदग्धाश्च पढ़ कर पिंडा धर दे फिर जल चढ़ावै वही दोनैया विकरा पिंड पर औंधाय दे और वही पैंती उतार हाथ पैर धोकर फिर आवै ॥ ७०॥

सव्यम् । आचमनम् । चुलुकदानम् । विश्वेदेवा ब्राम्हणा इदं वश्चुलुकम् ॥ ७१ ॥

सव्य हो आचमन कर चुल्लू में जल भर विश्वेदेवा ब्राह्मणा पढ़कर छोड़ै विश्वेदेवा पर ॥७१॥

अपसव्यम् । पितृब्राम्हणा इदं वश्चुलुकम् । मातामहब्राम्हणाइदं वश्चुलुकम् ॥७२॥

अपसव्य हो पितृ ब्राम्हण मातामह ब्राह्मणा पढ़कर चुल्लू से जल छोड़ै ॥ ७२ ॥

मधुमतीगायत्री जपः मधुव्वता ऋतायते मधुक्षरंतिसिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवग्वंरजःमधुद्यौरस्तुनः पिता । मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ अस्तुसूर्यःमाध्वीर्गावोभवन्तुनः । विश्वेदेवा ब्राम्हणा मधुमधुतृप्तास्थ तृप्तास्मः ॥७३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सव्य हो मधुव्वाता मन्त्र पढ़ विश्वदेवा मधुमधुतृप्तास्थ कह हाथ जोड़ै ॥ ७३ ॥

अपसव्यम् । पितृब्राम्हणामधुमधुतृप्तास्थ, मातामहब्राम्हणान्मधुमधुतृप्तास्थ,
तृप्तास्मः ॥ ७४ ॥

अपसव्य हो पितृ मातृ ब्राह्मण मधु २ तृप्तास्थ कह हाथ जोड़ै ॥ ७४ ॥

पिण्डदानार्थंवेदिका करणम् । वेदी सेचनम् । अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिकापुरी द्वारावती ज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायिकाः ॥ ७५ ॥

पितृ ब्राह्मणों के आगे पिंडों के लिये बालू या मिट्टी का चौकोर वेदी बनाय एक दोनैया में जल भर कुश डाल अयोध्या मथुरा पढ़के वेदी सींचै ॥ ७५ ॥

रेखा करणम् अपहंता असुरा रक्षाग्वंसिवेदिषदः ॥ ७६ ॥

वेदी में कुश की जड़ से खड़ी २ दो लकीर करै ॥ ७६ ॥

उल्मुकधारणम् । येरूपाणि प्रति मुंचमाना असुराः सन्तः स्वधया चरंति परापुरो निपुरो ये भरत्यग्निष्टां लोकात्प्रणु दात्यस्मत् ॥ ७७ ॥

वेदी के चारो ओर आगी की चिनगारी घुमावै ये रूपाणि मन्त्र पढ़के ॥ ७७ ॥

अथपिंडासनम् वामजानूभूमौनिधाय अमुकगोत्रअस्मत्पितः अमुकशर्मन्वसुस्वरूप सपत्नीकएतत्तेनग्वं स्वधा । इयंभूमिर्गयाइदमुदकंफलगूतीर्थस्यपुष्कराचमनम्इदंपित्रो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वेदी में खड़े २ कुश बिछावे फिर दोनैया में जल और कुश लेकर बायां घुटना जमीन में धर अमुकगोत्र अस्मत्पित: पढ़ गोत्र समेत पिता माता का नाम लेकर अंगूठा तिरक्षा कर कुश की जड़ से वेदी में जल छोड़े यही विधि ८३ नम्बर तक करै ॥ ७८ ॥

अमुकगोत्रअस्मत्पितामह अमुकशर्मन् रुद्रस्वरूपसपत्नीक एतत्तेनग्वंस्वधा इयम्भूमिर्गयाइदमुदकं फल्गूतीर्थस्य पुष्कराचमनं इदंपितामहाय ॥ ७९ ॥

दोनैया में कुश जल ले बायां घुटना टेक अमुक गोत्र अस्मत्पितामह पढ़ गोत्र समेत दादा दादी का नाम ले वेदी में जल छोड़े ॥ ७९ ॥

अमुकगोत्र अस्मन्मातामह अमुकशर्मन् आदित्यस्वरूपसपत्नीक एतत्तेनग्वं स्वधाइयंभूमिर्गया इदमुदकं फल्गूतीर्थस्य पुष्कराचमनं इदंप्रपितामहाय ॥ ८० ॥

अमुकगोत्र पढ़ गोत्र समेत परदादा परदादी का नाम ले वेदी में जल छोड़े ॥ ८० ॥

अमुकगोत्र अस्मन्मातामह अमुकशर्मन् अग्निस्वरूप सपत्नीक एतत्तेनग्वं स्वधा इयंभूमिर्गया इदमुदकं फल्गूतीर्थस्य पुष्कराचमनम् इदंमातामहाय ॥ ८१ ॥

नाना नानी का नाम लेकर वेदी में जल छोड़े ॥ ८१ ॥

अमुकगोत्र अस्मत्प्रमातामह अमकशर्मन वरुणस्वरूप सपत्नीक एतत्तेनग्वं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वधाइयंभूमिर्गया इद्रमुदकं फल्गूतीर्थस्य पुष्कराचमनम् इदंप्रमातामहाय ॥ ८२ ॥

गोत्र समेत परनाना परनानी का नाम ले जल छोड़ै ॥ ८२ ॥

बा० अमुकगोत्र अस्मद्वृद्धप्रमातामह अमुकशर्मन् प्रजापतिस्वरूप सपत्नीकएतत्तेनग्वं-
श्रा० स्वधाइयंभूमिर्गयाइदमुदकंफल्गूतीर्थस्यपुष्कराचमनम्इदंवृद्धप्रमातामहाय ॥८३॥

२५ दोनैया में जल कुश लेकर बायां घुटना जमीन पर टेक अमुक गोत्र अस्मद्वृद्धप्रमातामह पढ़कर वृद्ध परनाना परनानी का नाम ले अंगूठा तिरछा कर वेदी में जल छोड़ै ॥ ८३ ॥

पिंडों के लिए खीर (जाउर) या जव का आटा या खोवा जो कुछ भी हो उसमें घी शक्कर शहद तुलसी चन्दन तिल मिलाय बेल के बराबर छै पिंड बनाय पत्तल में धरै फिर दोनैया में जल कुश और एक पिंड उठाय बायां घुटना टेक अमुक गोत्र अस्मत्पितः (७८ नम्बर मन्त्र) पढ़ता हुआ गोत्र समेत पिता माता का नाम ले, पिंडा वेदी में धर अंगूठा तिरछा कर कुश की जड़ से जल चढ़ा दे, यह विधि ८३ नम्बर तक गोत्र समेत दादा दादी परदादा परदादी नाना नानी परनाना परनानी वृद्ध परनाना बृद्ध परनानी का नाम लेकर करै प्रत्येक पंक्ति तीन २ पिंड की बनावे ॥८३॥ बा०

मूलपितृभ्योनमः मूल मातामहेभ्यो नमः । पिंडाग्रेदर्भमूलेन करं प्रोक्षयेत् ॥ ८४ ॥ श्रौ०

पिंडों के आगे हाथ में लगी हुई खीर मूल पितृभ्योनमः पढ़के कुश की जड़ से छुटा दे ॥८४॥ २५

लेपभाग भुजस्त्रयप्यन्तु । कुशांस्त्यक्त्वा हस्तौचरणौ प्रक्षालयेत् ॥ ८५ ॥

लेप भाग पढ़के कुश फेंक दे, हाथ पर धो डाले ॥ ८५ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सव्यम् । आचमनम् । अक्षतान् गृहीत्वा ॥ ८६ ॥

सव्य हो आचमन कर हाथ में चावल लेकर ॥ ८६ ॥

अपसव्यम् । दक्षिणाभिमुखः अत्रपितरामादयध्वयथाभागमावृषाइषत · पठित्वा ॥८७॥

अपसव्य हो दक्षिण को मुख करके अत्रपितरो पढ़ै ॥ ८७ ॥

सव्यम् उत्तराभिमुखः श्वासनियमन कुबेराय नमः ॥ ८८ ॥

सव्य हो उत्तर को मुख करके श्वास चढ़ावै कुबेराय नमः कहै ॥ ८८ ॥

अपसव्यम् दक्षिणाभिमुखः । अमीमदंतपितरायथाभागमावृषाइषत । इत्यक्षतान् पिण्डोपरिनिक्षिपेत् ॥ ८९ ॥

अपसव्य हो दक्षिण को मुख करके पिंडों पर चावल छोड़ै ॥ ८९ ॥

अथ पिंडप्रत्यवनेजनम् वामजानुं भूमौ निधाय । अमुकगोत्र अस्मत्पितः अमुक शर्मन् वसुस्वरूप सपत्नीक पिंड प्रत्यवनेनिक्ष्व ॥ ९० ॥

दोनैया में जल कुशा लेकर बायाँ घुटना पृथ्वी पर टेक गोत्र समेत पिता माता का नाम ले पहले पिंड पर जल चढ़ा दे ॥ ९० ॥ मा०

अमुकगोत्र अस्मत्पितामह अमुकशर्मन् रुद्रस्वरूपसपत्नीक पिंडंप्रत्यवनेनिक्ष्व ॥ ९१ ॥ दा०

अमुक गोत्र पढ़ गोत्र समेत दादा दादी का नाम ले दूसरे पिंड पर जल चढ़ा दे ॥ ९१ ॥ १६

अमुकगोत्रअस्मत्प्रपितामहअमुकशर्मनआदित्यस्वरूपसपत्नीकपिंडंप्रत्यवनेनिक्ष्व ॥९२॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

गोत्र समेत परदादा परदादी का नाम ले तीसरे पिंड पर जल चढ़ा दे ॥ ६२ ॥

अमुकगोत्रअस्मन्मातामहअमुकशर्मन्अग्निस्वरूपसपत्नीकपिंडप्रत्यवनेनिक्ष्व ॥ ९३ ॥

पा० गोत्र समेत नाना नानी का नाम ले चौथे पिंड पर जल चढ़ा दे ॥ ६३ ॥

श्रा० अमुकगोत्रअस्मत्प्रमातामहअमुकशर्मन्वरुणस्वरूपसपत्नीकपिंडप्रत्यवनेनिक्ष्व ॥ ९४ ॥

२७ परनाना परनानी का नाम ले पाँचवें पिंड पर चढ़ा दे ॥ ६४ ॥

अमुकगोत्रोस्मद्प्रमातामहःअमुकशर्मन्प्रजापतिस्वरूपसपत्नीकपिंडप्रत्यवनेनिक्ष्व ॥ ९५

वृद्ध परनाना वृद्ध परनानी का नाम ले छठे पिंड पर जल चढ़ा दे ॥ ६५ ॥

नीबीं विसृज्य पिंडाग्रे ॥ ९६ ॥

कमर में खोंसा हुआ तिल कुश वाला पत्ता निकाल पिंडों के आगे धर दे ॥ ६६ ॥

अथ षडंजलि करणम् ॥ ९७ ॥

दोनों हाथों में तिल चावल लेकर पिंडों के ऊपर हथेली में मींज कर छोड़ै ॥ ६७ ॥

अथसूत्रदानम् । नमोवः पितरोरसायनमोवः पितरः शोषायनमोवः पितरोजीवाय । नमोवोःपितरःस्वधायैनमोवः पितरोघोरायनमावः पितरामन्यवेनमावः पितरः पितरो जा० नमोवोगृहान्नं पितरोदत्तसतोवः पितरोदेष्मैतद्वः पितरोवासआधत्त । एतद्वःमाता- दो० महवासः ॥ ९८ ॥ १०

ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ पिंडों पर सूत्र चढ़ावे ॥ ६८ ॥

ऊर्ज करणम् । ऊर्ज वहंतीर मृतघृतंपयःकीलालं परिस्रुतम् । स्वधास्थतपयत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेपितृन् । स्वधास्थतर्पयतमे माता महान् ॥ ९९ ॥

ऊर्ज बहन्ती से पिंडों को पंचामृत से स्नान करावे ॥ ९९ ॥

अर्थपिंडपूजा । पितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन् पितरोमोमदन्तपितरोतीतृपन्तपितरः पितरः शुंधध्वम् । तुलसी चन्दन पुष्प धूप दीप नैवेद्य तांबूल पूगफल यज्ञोपवीत वास्सांसि दक्षिणां च दद्यात् ॥ १०० ॥

पितृभ्यः से पिंडों की पूजा करै, तुलसी चन्दन फूल धूप दीप नैवेद्य पान सुपारी, जनेऊ वस्त्र दक्षिणा चढ़ावै आरती करै ॥ १०० ॥

संकल्पंकुर्य्यात् । अमुकगोत्राअस्मत् पितृपितामह प्रपितामहा, अमुकामुकामुकशर्माणो वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः अमुकगोत्राअस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः अमुकामुकामुकशर्माणः अग्निवरुण प्रजापति स्वरूपाः सपत्नीका अत्राधूपदीपनैवेद्यतांबूलपूगफल यज्ञोपवीत वासांसि षोढाविभज्ययुष्मभ्यंस्वधानमः॥

गोत्र समेत पिता माता दादा दादी परदादा परदादी नाना नानी परनाना परनानी वृद्ध परनाना वृद्ध परनानी का नाम ले जल चावल दक्षिणा हाथ में धर सङ्कल्प करै ॥ १०१ ॥

सव्यम् । आचमनम् । कुशजलेन विश्वेदेवाः सुप्रोक्षितमस्तुभूमिप्रक्ष्यशिवाआपः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन्तु सौमनस्यमस्तु यवाक्षत चारिष्टंचास्तु ॥ १०२ ॥

पा० सव्य हो आचमन करके दोनैया में कुश जव चावल ले विश्वेदेवा पर चढ़ावै विश्वेदेवा
श्रा० सुप्रोक्षित पढ़ता जाय ॥ १०२ ॥

अपसव्यन् । पितृब्राम्हण मातामह ब्राम्हण सुप्रोक्षितमस्तु भूमिंप्रोक्ष्यशिवाआपः
१९ सन्तु सौमनस्यमस्तु लिलाक्षतंचारिष्टंचास्तु ॥ १०३ ॥

अपसव्य हो तिलाक्षत जल कुश पितृ ब्राह्मण और मातृ ब्राम्हणों पर चढ़ावै ॥ १०३ ॥

सव्यम् । मूर्द्धाभिषेकः । अस्मत्कुले दीर्घमायुरस्तु शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु यच्छ्रेयंतदस्तु यत्पापंरोगंतत्प्रणश्यतुभूमौद्विपदे चतुष्पदेभ्यः शांतिः श्रीर्भवतु॥१०४॥

सव्य हो अस्मत् कुले पढ़कर कर्मपात्र का जल कुश से अपने सिर पर छिड़के ॥ १०४ ॥

अपसव्यम् । अक्षयोदकदानम् चुलुकेन जलकुशौ गृहीत्वा । अमुकगोत्रस्य अस्मत्पितुःअमुकशर्मणःवसुस्वरूपस्य एतत्सर्वयच्छत्तांतदक्षयमस्तु, अक्षीयतु॥ १०५॥

अपसव्य हो चुल्लू में कुश जल लेकर अमुक गोत्रस्य पढ़कर वर्ण गोत्र सहित पिता का भा०
नाम ले कुश की जड़ की तरफ से पहिले पिंड पर जल चढ़ा दे । यही अक्षयोदकदान है ऐसे ही टी०
अलग २ पांच पिंडों पर जल चढ़ावै ॥ १०५ ॥

अमुकगोत्रस्यअस्मत्पितामहस्य अमुकशर्मणः रुद्रस्वरूपस्य एतत्सर्वं यच्छत्तांतद- १९
क्षयमस्तु अक्षीयतु ॥ १०६ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमुक गोत्रस्य वर्ण गोत्र सहित बाबा का नाम ले दूसरे पिंड पर जल चढ़ावैं ।। १०६ ।।

अमुकगोत्रस्य अस्मत्प्रपितामहस्य अमुकशर्म्मणः आदित्यस्वरूपस्य एतत्सर्वं
पा० **यद्दतं तदक्षयमस्तु अक्षीयतु ।। १०७ ।।**

भा० अमुक गोत्रस्य पढ़ परदादा का नाम गोत्र बर्ण समेत ले तीसरे पिंड पर कुश के जड़ की
३० तरफ से जल चढ़ावै ।। १०७ ।।

अमुकगोत्रस्य अस्मन्मातामहस्य अमुकशर्मणोग्निस्वरूपस्य एतत्सर्वं यद्दतं–तदक्षयमस्तु अक्षीयतु ।। १०८ ।।

नाना का नाम ले चौथे पिंड पर जल चढ़ावै ।। १०८ ।।

अमुकगोत्रस्य अस्मत्प्रमातामहस्य अमुकशर्मणा वरुणस्वरूपस्य एतत्सर्वं यद्दत्तंतदक्षयमस्तु अक्षीयतु ।। १०९ ।।

परनाना का नाम ले पांचवें पिंड पर जल चढ़ावै ।। १०९ ।।

अमुकगोत्रस्य अस्मद् वृद्ध प्रमातामहस्य अमुकशर्मणः प्रजापतिस्वरूपस्य एत- भा०
त्सर्वंयद्दत्तंतदक्षयमस्तु अक्षीयतु अघोराः पितराः सन्तु अघोराः मातामहाष्सन्तु । टी०

वृद्ध परनाना का नाम लेकर छठे पिंड पर कुश की तरफ से चुल्लू का जल चढ़ावै ।। ११० ।। १०

सव्यम् अशीर्ग्रहणम् । गोत्रं नोवर्द्धतांवर्द्धन्तु दातारोवर्द्धतांवर्द्धन्तु वेदाः वर्द्धन्तां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्द्धन्तु सन्ततिर्वर्द्धतां वर्द्धतु श्रद्धांचना माव्यगमत् मागात् बहुदेयंचनास्तु तथास्तु अन्नंचभवेत् भवतु अतिथींश्चलंभेमहि लभध्व याचितारश्चनः सतु माचयाचिष्म कञ्चन मा याचेथाः एताएवाशिषः सन्तु आयुष्मान्धनवान् पुत्रवान्भव ॥ १११ ॥

दक्षिण की ओर मुंह करके हाथ जोड़ै "गोत्रनो" पढ़के ॥ १११ ॥

अथतिलककरणम् । ययं कामयतेकामन्तप्राप्नोति निश्चितम् । दीर्घायुत्वायं बलाय वर्चसे सुप्रजांस्त्वायथा जीवशरदः शतम् ॥ ११२ ॥

यंयं कामयते पढ़ अपने मस्तक में चन्दन का तिलक करै ॥ ११२ ॥

अपसव्यम्, न्युब्जापात्रोपरि कुशान् पिंडसमीपे प्रक्षिपेत् ॥ ११३ ॥

तीन दोनैया अर्धपात्र वाली जो औंधी रक्खी हैं उसके ऊपर वाले तीन कुशा पिंडों के पास छोड़ दे ॥ ११३ ॥

एकस्यांद्रोणिकायां जलंगृहीत्वा वामजान्ववाच्य । अमुकगोत्रेभ्याः अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहेभ्यः अमुकामुकामुकशर्मभ्यः स्वधोच्यतां अस्तुस्वधानमः अमुक-गोत्रेभ्यः अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः अमुकामुकामुकशर्मभ्यः स्वधोच्यतां अस्तु स्वधानमः ॥ ११४ ॥

एक दोनैया में जल ले बायां घुटना भूमि में झुकाये अमुकगोत्रेभ्यः पढ़के गोत्र समेत पिता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दादा परदादा नाना परनाना वृद्ध परनाना का नाम लेकर पिंडों पर चढ़ा दे ।। ११४ ।।

अर्घपात्रोत्तानंकृत्वा कुशाग्राणि कराभ्यांचालयेत् । मेपितृणास्वर्गेवासोस्तु मेमातामहीनां स्वर्गेवासोस्तु ।। ११५ ।।

अर्घपात्र वाली तीनों दोनैया जो उल्टी धरी हैं वह सीधी करदे और पिंडों के नीचे वेदी में जो कुश बिछे हैं हाथ से आगे खींच ले मे पितृणाम् में मातामहानां पढ़कर कहे हमारे पिता दादा परदादा, नाना परनाना वृद्ध परनाना सपत्नीक स्वर्ग में निवास करें ।। ११५ ।।

सव्यम् दक्षिणादानम् संकल्पः । ॐ अद्योस्मत्पित्रादित्रय मातामहादित्रय श्राद्धसम्बधिनां पुरूरव आर्द्रवसंत्रकानां विश्वेदेवानां कृतैतत्पार्वणश्राद्ध प्रतिष्ठार्थ मिदं हिरण्यमग्नि दवतं येथ(नामगोत्रायब्राह्मणायदक्षिक्षात्वेनदातु महमुत्सृजे।। ११६।।

ॐ अद्यास्मत् सङ्कल्प पढ़ ब्राह्मण को सुवर्ण की दक्षिणा दान करे ।। ११६ ।।

अपसव्यम् । ॐ अद्यामुक गोत्राणां अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामाहानां अमुकामुकामुकशर्मणां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां अमुक गोत्राणां अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहीनां अमुकामुकामुकशर्मणां अग्नि वरुण प्रजापतिस्वरूपा-णांसपत्नीकानां कृतैतत्पार्वण श्राद्धप्रतिष्ठा सिद्धयर्थं रजतं तन्निष्क्रयं द्रव्यं यथो-परिमितंषोढाविभज्ययुष्मभ्यं अस्यविवेन्यू नातिरिक्तं यत्कृतंतत्सुकृतमस्तु यन्नकृतं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

तद्विष्णोः प्रसादात् ब्राम्हण बचनात् सर्वविधि परिपूर्णमस्तु ॥ ११७ ॥

अपसव्य हो ॐ अद्यामुक गोत्राणां पढ़के पिता माता दादा दादीपरदादा परदादी नाना नानीपरनाना परनानी वृद्धपरनाना वृद्धपरनानी का गोत्र समेत नाम लेकर ब्राह्मणको चांदी की दक्षिणा दे ॥११॥

सव्यम् । तुलसी शिरसि स्थापयेत् । सव्य हो अपने शिर में तुलसी रक्खै ॥ ११८ ॥

अपसव्यम् । पिंडविसर्जनम् । मध्य आदि अन्तक्रमेण ॥ ११९ ॥

अपसव्य हो पिंड विसर्जन करै पहले बीच का पिंडा पत्तल में धरै फिर पहला तीसरा पिंडा उठावे ऐसे ही सब पिंड उठावै ॥ ११९ ॥

सव्यम् । दक्षिणवृतावेद्याःकुशानाकृष्यवेदीसेचनम् कुशेनशंखचक्रऋतूंश्चलिखेत् ।

सव्यहोवेदीके बिछे कुश उठाय वेदीको साफ करसीचैंफिर कुशसे शंखचक्रतथाछैगोड़रेगोल२बनावै॥१२०

चन्दना क्षतैः शंखचक्राभ्यांनमः हिमशिशिरवसन्तग्रीष्मवर्षाशरद् । गयायांपितृरूपेण स्वयमेवजनार्दनः इतिदृष्टवापुंडरीकाक्षंमुच्यतेचऋणत्रयात् । वसन्तादिषड्ऋतुभ्यो नमः समीपत्रप्रमाणेनपिंडदद्यात् गयाशिरे । उद्धरेत्सप्तगोत्राणि कुलमेकोत्तरंशतम् ॥

गयायां पितृरूपेण पढ़के चंदन चावल से षड़ऋतु की पूजा करै ॥ १२१ ॥

अपसव्यम् पत्रावली सपिंडचतुष्पत्रं दक्षिणेष्कन्धेकृत्वा पुनर्वामस्कंधेनमस्कारान् कृत्वा सव्यमाघ्रायअपसव्यंवेद्यांस्थापयेत् मेपितृणांस्वर्गस्वस्थानवासः । अत्र वर्द्धयते नित्यंदाताचप्रविर्द्धयेत् यस्यार्थे कल्पितः श्राद्धस्तष्य तृप्तिमनंतकम् ॥ १२२ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपसव्य हो पत्तल में पिंडा उठाय चौपरताय पहिने कंधे में छुवाय फिर बांयें कंधे में छुवाय नमस्कार करै फिर सव्य हो पत्तल को सूंघ ले अपसव्य हो वेदी में धरके मेपितृणां स्वर्गस्व—
वा० स्थानावासः कहै ॥ १२२ ॥

मा० पितृब्राम्हणान्विसर्जयेत् । वाजेवाजेवतव्वाजिना नाधनेषु विप्राअमृताऋतज्ञः
२४ अस्यमदध्वः पिवतमादध्यन्तृप्तायात पथिभिर्देवयानै ॥ १२३ ॥

बाजे बाजे पढ़के पितृ ब्राह्म मातृ ब्राह्मणों की गाँठी खोल दे ॥ १२३ ॥

सव्यम् । विश्वेदेवान्विसर्जयेत । देवागातु विदोगातु विवागातु मिदमन सस्पतइमं देवयज्ञाग्वंस्वाहाव्वातेधः । सव्यहो देवागातु पर विश्वेदेवा की गाँठीखोलदे।१२४।

अपसव्यम् । कर्मपात्रजलेनआमावाजस्यपहित्वाप्रदक्षिणी करणम् आमावाजस्यप्रसवो जगम्यादेमेद्यावापृथिवीविश्वरूपेआमागंतापितराचामासोमोअमृतत्वे नगम्यात् ॥ १२५

अपसव्यहो एकदोनैयामें कर्मपात्र का जलले आमावाजस्य पढ़ अपने चारों तरफ घुमाकर फेंकदे। १२५

दीपं विसर्ज्जयेत्, तदुपरि अक्षात क्षेपः । दीपक पर चावल छोड़ विसर्जन करै ॥ १२६ ॥ मा०

सव्यं, आचमनम् । कर्म्मसाक्षिणसूर्य्यायनमः।सव्य होआचमन करकेसूर्यकोनमस्कार करे। १२७ टी०

पुष्पांजलिंदद्यात् । पुष्पांजलि दे । १२८ । ततस्तर्पणंकुर्यात् । फिर तर्पण करै ॥ १२९ ॥ २४

॥ इति कानपुर चौक निवासी पंडित महेशनारायण कृत पार्वणश्राद्धपद्धति भाषा टीका सहितसमाप्त।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथ देवर्षि पितृ तर्पणम्

पा॰ प्रथम स्नानादि क्रिया से निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र पहन अंगौछा लेकर पूर्व को मुख आसन
श्रा॰ पर बैठ अपवित्रः मन्त्र से तीन बेर आचमन करे ।

३५ अपवित्रःपवित्रोवासर्वावस्थांगतोऽपिवा । यःस्मरेत्पुंडरीकाक्षंसवाह्याभ्यंतरः शुचिः ।।

फिर दो कुश की पैंती दाहिनी अनामिका में और तीन कुश की पैंती पवित्री बाईं अनामिका में पहन कर चावल पान सुपारी दक्षिणा दाहिने हाथ में लेकर सङ्कल्प करें ।

तत्रसंकल्पः । ॐ तत्सद्यैतस्य ब्रम्हणोह्नि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेत वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेकलियुगेकलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपेभरतखंडे आर्य्यावर्तैकदेशान्तर्गतेपुण्यक्षेत्रेवर्तमाननामसंवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोअमुकशर्म्माहंश्रीपरमेश्वर प्रीतये देवर्षिपितृतर्पण करिष्ये ।

फिर त्रिकुश जल चावल ले आवाहन करके एक २ अंजलि ब्रह्मादि देवों को देवे ।

ॐ ब्रम्हादयोदेवाआगच्छंतुगृहणन्त्वेतांजलीन् ॐब्रम्हातृप्यताम् ॐ विष्णुस्तृ०ॐ रुद्र- मा॰
स्तृ०ॐप्रजापतिस्तृ० देवास्तृप्यंताम्छन्दांसितृ० वेदास्तृ० ऋषयस्तृ०ॐ पुराणाचा- टी॰
र्यास्तृ०ॐ गंधर्वास्तृ० ॐ इतराचार्यास्तृ० ॐ सम्वत्सरास्सावयास्तृ० ॐ देव्यस्तृ० ३१
ॐ अप्सरसस्तृ० ॐ देवानागांस्तृ०ॐ नागास्तृ० ॐ सागरास्तृ० ॐ पर्वतास्तृ०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

ॐ सरितस्तृ० ॐ मनुष्यास्तृ० ॐ यक्षास्तृ० ॐ रक्षासितृ० पिशाचांस्तृ०
पा० ॐ सुपर्णास्तृप्यन्तां, भूतानितृप्यंतां ॐ पइखस्तृ० बनस्पतयस्तृ० औषधयस्तृ०
भूतंग्रामचतुर्विधस्तृप्यताम् जनेऊ को माला की तरह पहन उत्तर मुख बैठ आवाहन कर
श्रा० कुश जव चावल की दो २ अंजलि सनकादिकों को देवै। ततः ॐ सनकादयः सप्तमनुष्या-
३६ आगच्छन्तुगृह्णन्त्वेतांजलीन् ॐ सनकस्तृप्यताम् ॐ सनन्दनस्तृ० ॐ सना-
तनस्तृ० ॐ कपिलस्तृ० ॐ आसुरिस्तृ० ॐ वोढुस्तृ० पंचशिखस्तृ० मरीच्यादि
दश ऋषियों का आवाहन कर पूर्व मुख हो कुश चावल जल की एक २ अंजलि देवे।
मरीच्यादि दश ऋषय आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतां जलांजलीन् ॐ मरिचिस्तृप्यताम्
ॐ अत्रिस्तृ० ॐ अंगिरास्तृ० ॐ पुलस्त्यस्तृ० ॐ पुलहस्तृ० ॐ क्रतुस्तृ०
ॐ प्रचेतास्तृ० ॐ वसिष्ठस्तृ० ॐ भृगुस्तृ० ॐ नारदस्तृ०।

अपसव्य हो दक्षिण मुख बैठ तिल जल अक्षत ले आवाहन कर तीन २ अंजलि जल कव्यवाड
नलादिकों को देवै। ॐ कव्यवाडनलादयोदिव्यपितरआगच्छन्तुगृह्णन्त्वेतांजलाञ्जलीन् मा०
ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं तिलोदकंतस्मैस्वधानमः ३ ॐ नलस्तृ०३ ॐ सो- टी०
मस्तृ ३ ॐ यमस्तृप्यतामिदं३ ॐ अर्यमास्तृ०३ ॐ अग्निस्वात्ताःपितरस्तृप्यंतामिदं ३६
तिलोदकंतेभ्यः स्वधानमः ३। ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यंतामिदं ३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ॐ बर्हिषदःपितरस्तृप्यंतामिदं ३ ॐ यमादिचतुर्दश देवा अगचछन्तु गृह्णन्त्वे-

तांजलांजलीन् ॐ यमायनमः ३ ॐ धर्म्मराजायनमः ३ ॐ मृत्यवेनमः ३ ॐ

पा० अन्तकायनमः ३। ॐ वैवस्वतायनमः ३ ॐ कालायनमः ३ ॐ सर्वभूतक्षयायनमः

श्रा० ॐ औदुम्बरायनमः ३ ॐ दध्नायनमः। ॐ नीलायनमः ३ ॐ परमेष्ठिनेनमः ३

३७ ॐ वृकोदरायनमः ३ ॐ चित्रायनमः ३ ॐ चित्रगुप्तायनमः ३।

पितरों का स्मरणकर कुशमोटकऔर तिलाक्षत ले आवाहन कर तीन२ अंजलिजलकीपितरोंकोदेवें।

ॐअनुकगोत्राःअस्मत्पितरआगचछन्तुगृह्णन्त्वेतांजलांजलीन् पिताका नामलेकर जलदेवे।

ॐ अमुकगोत्रोऽस्मत्पिताअमुकशर्मावसुस्वरूपस्पतृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधानमः ३

दादा का नाम ले तीन अंजलि जल दे। ॐ अमुकगोत्रोऽस्मत् पितामहोऽमुकशर्मा

रुद्रस्स्वरूस्तृ० मिदं जलं तस्मै स्वाधानमः ३।परदादा का नामलेकर तीन अंजलि जलदे

ॐअमुकगोत्रोऽस्मत्प्रपितामहोऽमुकशर्मा आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै मा०

स्वधायनमः ॥ ३ ॥ माता का नाम ले तीन अंजलि जल दे। टी०

ॐअमुकगोत्रास्मन्माताऽमुकीदेवीगायत्री स्वरूपातृप्यतामिदंजलं तस्यैस्वधानमः। ३ ३७

दादी का नाम ले कर तीन अंजलि जल दे।अमुगोत्राऽस्मत्पितामहीअमुकीदेवी सावित्री

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वरूपा तृप्यतामिदं जलं तस्यै० ३ ।। परदादी का नाम ले तीन अंजलि जलं दे ।
ॐ अमुकगोत्राऽस्मप्रपितामही अमुक देवी सरस्वती स्वरूपातृप्यतामिदं जलं
तस्यै स्वधानमः४।। फिर माता महादिक नाना नानी का गोत्र समेत नाम ले जल दे ।
नाना नानी का नाम ले ३ अंजलि जल दे। अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामहोमुकशर्मा अग्नि-
स्वरूपस्सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मैस्वधानमः ३ । परनाना परनानी का नाम ले ३
अंजलि जल दे। अमुकगोत्रोऽस्मत्प्रमातामहऽमुक शर्मा वरुणस्वरूपस्सपत्नीकस्तृप्य-
तामिदं जलं तस्मै स्वधानम; ३ । वृद्ध परनाना वृद्ध परनानी का नाम ले । अमुकगोत्रो-
ऽस्मत्वृद्ध प्रमातामहोमुकशर्मा प्रजापतिस्वरूपस्सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलंतस्मै
स्वधानमः ३ । को जल देवे इसी प्रकार चाचा चाची पुत्र पुत्री भाई बहन बुआ मौसी मामा
श्वसुर सास गुरु पत्नी शिष्यादि को जल देवे चाचा का नाम ले तीन अंजलि जल दे ।
अमुकगोत्रोऽस्मत्पितृव्यःअमुक शर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधानमः ३ ।
चाची का नाम ले। अमुकगोत्रास्मत्पितृव्यपत्नी अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यैस्व-
धानमः ३ । गुरु का नाम ले ।

अमुकगोत्रोऽस्मद्गुरुः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधानम; ३ ।।
गुरु पत्नी का नाम ले । ॐअमुकगोत्राऽस्मद् गुरुपत्नी अमुकीदेवी तृप्यतामिदं जलं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तस्यै स्वधानमः ३ । इसी प्रकार जल दे ।

ॐ आब्राम्हस्तम्बपर्य्यन्तं देवर्षि पितृ मानवाः । तृप्यन्तुपितरः सर्वमातृ मातामहा-दयःयेऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनिबांधवाः तेसर्वेतृप्तिमायान्तु मद्दत्तेनाम्बु-नासदा वस्त्र निचोड़े । येचास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणोऽमृतः । तेगृह्णन्तु मयादत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकम् । कुश से जल छिड़के । येषांपितानचभ्रातानपुत्रानाऽन्य गोत्रिणः तेसर्वेतृप्तिमायान्तु मयात्सृष्टैः कुशोदकैः ।

सव्यम् आचमनम् । सव्य हो आचमन कर भीष्म पितामह को जल दे । ॐ वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत प्रवरायच । अपुत्राय ददाम्येतज्जलंभीष्माय वर्म्मणे । सूर्य को अर्घ्य दे ।

ॐ एहिसूर्य्यसहस्रांशोतेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पयमांभक्त्यागृहाणार्घ्यंदिवाकर इति

अथ ब्राम्हण भोजन संकल्पः । ॐ तत्सदद्यामुकगोत्रोऽमुकशर्मा अस्मिन्कर्मणि यथा संख्यकान् यथा सम्पादितेन भोजनेनाहं भोजयिष्ये ।

अथ गोग्रासः । सुरभिर्वैष्णवो माता नित्यं विष्णुपदेस्थिता । गोग्रासन्तु मयादत्तं सुरभिः प्रतिगृह्यताम् । इदमन्नं गोभ्योनमः ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस श्लोक से गौवों के लिये अन्नादि पदार्थ देवे अर्थात् गोग्रास निकाल कर रक्खे और श्लोक पढ़ जल छोड़ फिर गौ को खिला देवे ॥ १ ॥

अथ काल बलिः । अपसव्य होकर इस श्लोक से कौवों के लिये अन्नादि पदार्थ देवे ।

ऐन्द्र वरणवायव्यः सौम्यावै नैर्ऋतास्तथा । वायसाः प्रतिगृहणन्तु भूमावन्नं मयार्पित । इदमन्नं वायसेभ्योनमः २ ॥ ❋ **अथ स्वबलिः** ❋ माला की तरह जनेऊ करके ।

द्वौश्वानौ श्याम सबलौ वैवश्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं प्रयच्छामिस्यतामेता-र्वांहिसकौ इदमन्नं श्वभ्यांनमः ।

इस श्लोक से कुत्तों को अन्नादि पदार्थ देवै ।

अथ अतिथि बलिः । पिपीलिकाकीटपतंगकाद्याबुभुक्षितःकर्म्मनिबंधबद्धाः । प्रयान्तुते तृप्ति मिदं मयान्नं तेभ्योविसृष्टं सुखिनो भवन्तु । इदमन्नं अतिथि-भ्योनमः ।

इस श्लोक से अतिथि के वास्ते अन्नादि पदार्थ देवे ॥ ५ ॥

॥ इति श्राद्ध पद्धतिः समाप्तः ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

॥ कर्मकाण्ड की धार्मिक पुस्तकें ॥

टीकाकार—पं० मन्नीलाल मिश्र

जन्मकुण्ड पंचावली भा० टी०	४.००
यज्ञोपवीत पद्धति	१.००
विवाह पद्धति	१.००
पार्वण श्राद्ध	१.५०
हरतालिका व्रत कथा	१.२५
सत्यनारायण व्रत कथा रेवाखण्डी	१.५०
सत्यनारायण व्रत कथा इतिहास समुच्चय	२.५०
यजुर्वेदीय संध्योपासन	.७५
वाजिसनेयी हवन पद्धति आचार्य वागीश शास्त्री	२.५०
श्री महालक्ष्मी व्रत कथा	१.५०
सामवेदीय संध्योपासन प्रयोग	.७५
गजेन्द्र मोक्ष	१.२५
श्री रामस्तव राज	१.२५
सन्तान गोपाल स्तोत्रम्	१.२५
एकमुखि पञ्चमुखि हनुमत्कवचम्	१.२५
त्रिसूक्त (लक्ष्मी पुरुष सूक्तम्)	१.२५
कलश प्रतिष्ठा भा० टी०	१.५०
आदित्य हृदय	१.५०
अनन्त व्रत कथा	१.५०
शिवमहिम्नस्तोत्र एवं शिवताण्डव	१.२५
सन्तान सप्तमी मुक्ताभरण	१.२५
मूल शान्ति	१.५०
महालक्ष्मी बसन्त-पूजन	१.५०
एकोदृष्टी श्राद्ध	१.२५
ज्योतिष प्रभा एवं कुण्डली निर्माण	१.५०
महामृत्युञ्जय जप-विधि	१.५०
ऋषि पञ्चमी	१.२५
प्रत्यंगिरा स्तोत्र	१.२५
नान्दीमुख श्राद्ध प्रकाश	१.२५
प्रेतमंजरी	१.५०
बगलामुखी स्तोत्र	१.२५
बटुक भैरव स्तोत्र	१.५
राम रक्षा स्तोत्र	१.२५

पुस्तकें मिलने का पता:—श्रीकृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर–१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

।। कर्मकाण्ड की धार्मिक पुस्तकें ।।

टीकाकार—पं० मन्नीलाल मिश्र

[illegible]कुण्ड पंचावली भा० टी०	४.००
यज्ञोपवीत पद्धति	१.००
विवाह पद्धति	१.००
पार्वण श्राद्ध	२.५०
हरतालिका व्रत कथा	१.७५
सत्यनारायण व्रत कथा [illegible]	१.५०
सत्यनारायण व्रत कथा इतिहास समुच्चय	२.५०
यजुर्वेदीय संध्योपासन	.७५
याज्ञिकी हवन पद्धति आचार्य [illegible] शास्त्री	२.५०
श्री महालक्ष्मी व्रत कथा	१.५०
सामवेदीय संध्योपासन प्रयोग	.७५
गजेन्द्र मोक्ष	१.२५
श्री रामस्तव राज	१.२५
सन्तान गोपाल स्तोत्रम्	१.२५
एकमुखि पञ्चमुखि हनुमत्कवचम्	१.२५
त्रिसूक्त (लक्ष्मी पुरुष सूक्तम्)	१.२५
कलश प्रतिष्ठा भा० टी०	१.५०
आदित्य हृदय	१.५०
अनन्त व्रत कथा	१.५०
शिवमहिम्नस्तोत्र एवं शिवताण्डव	१.२५
सन्तान सप्तमी मुक्ताभरण	१.७५
मूल शान्ति	१.५०
महालक्ष्मी [illegible]-पूजन	१.५०
एकोद्दिष्ट श्राद्ध	१.२५
ज्योतिष प्रभा एवं कुण्डली [illegible]	१.५०
महामृत्युञ्जय जप-विधि	१.५०
ऋषि पञ्चमी	१.२५
प्रत्यंगिरा स्तोत्र	१.२५
नान्दीमुख श्राद्ध पद्धति	१.२५
प्रेतमंजरी	२.५०
बगलामुखी स्तोत्र	१.२५
बटुक भैरव स्तोत्र	१.५
राम रक्षा स्तोत्र	१.५०

पुस्तकें मिलने का पता:—श्रीकृष्ण पुस्तकालय, चौक, कानपुर-१

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE